सम्पर्क और वाणिज्य एवं व्यापार

1 हड़प्पा कालीन संस्कृति की विशेषता वहां असंख्य छोटे-बड़े नगरों की उपस्थिति थी हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे शहरों के अलावा अल्लाहदीनो (कराँची) के पास जैसे बहुत सी छोटी बस्तियों से भी ऐसे प्रमाण मिले है जो शहरी अर्थव्यवस्था के सूचक है। शहरी अर्थव्यवस्था की विशेषता यह होती है कि इनमें अंतर सम्बन्धों का तंत्र किसी क्षेत्रीय सीमा में बंधा नहीं होता हड़प्पा से सैकड़ो मील दूर स्थित दूसरे शहरो और नगरों के लोगों से हड़प्पा वासीयों का सक्रिय आदान प्रदान होता था

2. हड़प्पा नगरवासीयो ने दूरस्थ देशों से सम्पर्क क्यों स्थापित किया और हमें इस विषय में कैसे पता चलता है? ———।

[I] शहरी केन्द्रो में जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा खाद्यान उत्पादन में न लगकर दूसरे अन्य प्रकार के कार्य कलापों में लगा होता है। ये लोग प्रशासनिक, व्यापारिक एवं विनिर्माण कार्य करते है। साथ ही साथ वे स्वयं उत्पादन नही करते है तो वह काम दूसरे को उनके लिए करना पड़ता है यही कारण है कि नगर खाद्यान आपूर्ती के लिए आस पास के ग्रामिण क्षेत्र पर निर्भर रहते है।

[II] शहरो के प्रशासनिक या धार्मिक केन्द्रो के रूप में विकास होने पर पूरे देश के संसाधन वहां एकत्र हो जाते है यह सम्पती करों, उपहार, भेंट या खरीदे हुए समानो के रूप में भितरी प्रदेश से शहर में आ जाती है।

[III] हड़प्पा समाज में इस सम्पती का नियन्त्रण शहरी समाज के सबसे अधिक प्रभावशाली लोगो के हाथ में था साथ ही साथ शहर के धनी और प्रभावशाली लोग आरामदायक जीवन बिताते थे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा उनके द्वारा बनाये गये भवनो और उनके द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली भोग विलास की वस्तुओ के अधिग्रहण के प्रतिबिम्बीत होती है। जो स्थानिय रूप से अनुपलब्ध थी यह इस बात का संकेत करता है कि शहरो का दूरस्थ प्रदेश से सम्पर्क स्थापित करने का मुख्य कारण इन अमीर और प्रभावशाली लोगो की आवश्यकताओं को पूरा करना था हड़प्पावासियो के दूरस्थ देशो से सम्पर्क स्थापित करने के कारणो में से एक कारण यह भी हो सकता है।

3. हड़प्पा, कालीबंगा और मोहनजोदड़ो वाला समाज हड़प्पा सभ्यता का मूल क्षेत्र यहां पर एक प्रासंगीक प्रश्न उठाया जा सकता है कि अफगानिस्तान के शार्तुघई और गुजरात के भगत राव जैसे दूर तक फैले हुए क्षेत्र में हड़प्पा सभ्यता के लोगो ने बस्तियां क्यों बसाई?

इसकी युक्तिसंगत एवं विभिन्न क्षेत्रों की आपसी आर्थिक अन्तर्निर्भरता और व्यापार तन्त्र है

Scanned with CamScanner

मूल संसाधनों का अलग-अलग स्थानों पर उपलब्ध होना सिन्धु घाटी के विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ने का महत्वपूर्ण कारण था। इन संसाधनों में कृषि सम्बन्धि संसाधन, खनिज संसाधन, लकड़ी इत्यादि शामिल थे और ये व्यापार मार्गों की स्थापना करके ही प्राप्त किये जा सकते थे। उपजाऊ सिन्धु हाकड़ा मैदान के धनी लोग अधिक से अधिक विलासिता की वस्तुए प्राप्त करना चाहते थे इसलिए उन्होंने अफगानिस्तान और मध्य एशिया के साथ पहले से विद्यमान सम्बन्धों को और मजबूत बनाया उन्होंने गुजरात और गंगा की घाटी जैसी जगहों पे भी बस्तियाँ बसायी।

आर्थिक जीवन

हड़प्पा वासीयों का दो प्रकार का सम्पर्क था —

A — अन्तःक्षेत्रीय सम्पर्क

B — फारस की खाड़ी और मेसोपोटामीया के साथ सम्पर्क

A — अन्तःक्षेत्रीय सम्पर्क — 1 - हड़प्पा नगरों के आपसी और उस समय के दूसरे राष्ट्रों और समाजों के साथ सम्पर्क के स्वरूप का मूल्यांकन हड़प्पा कालीन नगरो की खुदाई द्वारा पायी गयी वस्तुओं पर आधारित है। इनमें से कुछ प्रमाणों की पुष्टी समकालीन मेसोपोटामीया के सभ्यता के लिखित स्रोतों में पाये गये प्रसंगों द्वारा की गयी है

(2) हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो में पाये गये अन्नागारगृह के प्रमाण मिले हैं ये बड़ी इमारतें अनाज रखने के लिए बनायी गयी थी शहरी केन्द्र खाद्यान्न आपूर्ति के लिए गाँव पर ही निर्भर होते हैं अनाज ऐसा संसाधन है जिसकी रोज बड़ी मात्रा में खपत होती है। काफी मात्रा में अनाज एकत्रीत करके बैलगाड़ीयों और नावों द्वारा भेजा जाता था दूरस्थ स्थानों के लिए अधिक मात्रा में खाद्य सामग्री ढोना मुश्किल काम है यही कारण है कि नगर सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्रों में पाये गये हैं और सम्भवतया वहाँ अनाज आस पास के गाँव से लाया जाता था उदाहरण के लिए मोहनजोदड़ो जो की सिन्ध के लरकाना जिले में स्थित था आज भी सिन्ध का सबसे उपजाऊ क्षेत्र माना जाता है।

(3) व्यापार मार्गों या औद्योगिक क्षेत्रों में कुछ अन्य बस्तियाँ स्थापित हुई थी क्योंकि बस्तियों की अवस्थिती किसी क्षेत्र की कृषि से सम्बन्धित उपजाऊ क्षमता पर जितना निर्भर नहीं करती जितना की व्यापार और विनिमय की सम्भावनाओं पर निर्भर करती है।

4 हड़प्पा विकसित शहर कैसे बना ?

(1) किसी शहर के उत्कर्ष के दो सहायक तत्व होते हैं — (क) खाद्य उत्पादन के लिए उस स्थान की समर्थता
(ख) - उसकी व्यापार मार्गों एवं खनिज स्रोतों से निकटता

(ii) यदि हम उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखें तो हम पायेंगे की हड़प्पा की स्थिती बहुत ही अनुकूल है। इसके उत्तर पश्चिम के समुचे भौगोलिक क्षेत्र में किसी दूसरी हड़प्पा कालीन बस्ती के प्रमाण नहीं मिले हैं यहाँ तक की 19वीं शताब्दी में भी इस क्षेत्र में मुख्यतया खानाबदोश चरवाहे ही रहते थे कुछ विद्वानों का मत है कि हड़प्पा ऐसी जगह पर स्थित था जो दक्षिण की ओर स्थित कृषि बस्तियों और उत्तर पश्चिम की ओर स्थित खानाबदोश चरवाहों बस्तियों को एक दूसरे को विभाजीत करती थी इस प्रकार हड़प्पा के लोग दोनों सम्प्रदायों के प्रा[?]लोगों का उपयोग कर सकते थे।

(iii) ऐसा भी कहा जाता है कि यद्यपि खाद्य उत्पादन के सम्बन्ध में हड़प्पा का कोई भी महत्वपूर्ण योगदान नहीं था फिर भी यह बड़े शहर के रूप में विकसित हो सका क्योंकि व्यापारिक बस्ती के रूप में इसकी अवस्थिती बहुत महत्वपूर्ण थी

(iv) यदि हम हड़प्पा को बीच में रखकर लगभग 300 KM के क्षेत्र में उसके चारो ओर एक वृत बनाए तो हम पायेंगे की हड़प्पा की स्थिती बहुत ही उत्तम है — (क) हड़प्पा निवासीयों को हिन्दुकुश और पश्चिमोत्तर सिमांत तक पहुँच थी इसका अर्थ यह है कि लगभग दस दिन की यात्रा करके हड़प्पा निवासी उस क्षेत्र में पहुंच सकते थे जहां फिरोजा और "वैदुर्यमणी" जैसे बहुमुल्य पत्थर पाये जाते थे ये बहुमुल्य पत्थर हिंदुकुश तथा पश्चिमोत्तर सिमांत के मार्ग से से लाये जाते थे।

(ख) - वे नमक क्षेत्र से खनिज नमक भी प्राप्त कर सकते थे

(ग) उन्हें राजस्थान से टिन और ताम्बा अपेक्षाकृत सुलभ रूप से प्राप्त हो जाता था।

(घ) सम्भवतया वे कश्मीर के सोने का उपयोग करते थे।

(ङ) हड़प्पा के 300 KM की परिधि में पंजाब की पाँचों नदियां सम्मिलित थी अर्थात हड़प्पा निवासीयों का पंजाब की पाँचों नदीयों के नदी परिवहन पर नियंत्रण था।

(च) हड़प्पा की अवस्थिती उनके निवासीयों को कश्मीर के पर्वतीय क्षेत्रों से लकड़ी प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती थी

(छ) हड़प्पा ऐसी जगह पर स्थित है जहां आधुनिक समय में भी पश्चिम एवं पुर्व की अनेक व्यापारिक मार्गों आपस में मिलती है।

(v) मोहनजोदड़ो के संदर्भ में कुछ विद्वानों का मानना है कि मोहनजोदड़ो में बड़ी इमारतों का धार्मिक महत्व था और यह एक धार्मिक केन्द्र था। यह धार्मिक केन्द्र हो या नहीं, यहां के अमीर लोग सोना, चांदी और दूसरी बहुमूल्य वस्तुओं का प्रयोग करते थे। जो स्थानीय रूप से प्राप्त नहीं थे। हड़प्पा की तुलना में मोहनजोदड़ो समुद्र से अधिक निकट था इसके कारण मोहनजोदड़ो वासियों के लिए फारस की खाड़ी और मेसोपोटामिया पहुंचना आसान था। फारस की खाड़ी और मेसोपोटामिया क्षेत्र थे जो सम्भवतया चांदी के मुख्य आपूर्ति कर्ता थे। (Suppliers)

(vi) इसी प्रकार लोथल निवासी दक्षिणी राजस्थान और गुजरात से शंखादि प्राप्त करते थे सम्भवतः हड़प्पा वासियों को कर्नाटक से सोना प्राप्त करने में मदद करते थे।

Note- कर्नाटक के सोने की खानों के पास समकालीन नव पाषाण युगीन बस्तियां पायी गयी हैं।

(vii) → गाँव आवश्यक, अनाज, कच्चा माल इत्यादि नगरों को भेजते थे लेकिन हड़प्पा सभ्यता के नगर बदले में उन्हें क्या देते थे ?

[i] इस प्रश्न के उत्तर देने के लिए हमें कुछ इने गिने सुराग मिले हैं। एक तो यह कि नगरों के शासक अनाज को कर के रूप में वसूल करने के लिए बल प्रयोग करते थे यह कर प्रशासनिक सेवाओं के बदले लोगों द्वारा दिया जाता था एवं ग्रामीण शहरी सम्बन्ध का एक महत्वपूर्ण आयाम उन समस्त वस्तुओं को प्राप्त करना था जो स्थानीय रूप से उपलब्ध नहीं थी और उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध कराना था

(ii) हड़प्पा काल की दिलचस्प वस्तुएं पत्थर के औजार थे। हड़प्पा सभ्यता के लगभग सभी नगरों और गाँव के लोग समानान्तर आकार के पत्थर के ब्लेड का प्रयोग करते थे ये पत्थर के ब्लेड बहुत ही उच्च स्तर के पत्थर से बनाये जाते थे जो हर स्थान पर नहीं पाये जाते थे। ऐसा माना जाता है कि इस प्रकार का पत्थर सिन्ध में सुक्कुर (Sukkur) नामक स्थान से लाया जाता था

[iii] हड़प्पा के लोग ताम्बे और कांसे जैसी वस्तुओं का प्रयोग करते थे ताम्बा कुछ ही स्थानों पर उपलब्ध था हड़प्पा के लगभग सभी बस्तियों में ताम्बे और कांसे के औजार पाये गये हैं। हड़प्पा सभ्यता के सभी बस्तियों में पाये गये लगभग इन औजारों की बनावट और प्रयोग में एक रूपता थी इससे यह पता चलता है कि वहां उत्पादन एवं वितरण सम्भवतः केन्द्रीय संस्थाओं द्वारा किया जाता होगा।।

इन संस्थाओं के नगरों में रहने वाले प्रशासक, या व्यापारी शामिल थे। इसके अलावा हड़प्पा सभ्यता की छोटी अथवा बड़ी बस्तियों से सोने चांदी और अनेक कीमती और अर्ध कीमती पत्थरों से बनी वस्तुए भी पायी गयी है ये धातु और पत्थर व्यापारियों या शहर के शासकों द्वारा ही लाये जाते होंगे।

नोट :— गांव की अवस्थिती मुख्यतया भूमि की उपजाऊ क्षमता और सिंचाई की सुविधा की सुलभता पर निर्भर करती है।

VIII कभी कभी नगरों की अवस्थिती व्यापार के घटक पर अन्य घटकों से अधिक निर्भर करती थी तथा कई नगर उन अनुपयोगी जगहो पर बसाये गये जहां कृषि उत्पादन बहुत कम था उदाहरण के लिए मकरान समुद्र तटपर स्थित सुत कांगेडार एक ऐसी ही बस्ती थी जिनकी मुख्य भूमिका हड़प्पा और मेसोपोटामिया के बीच व्यापार चौकी के रूप में थी।